प्रातः क्लास 25/12/68 ओमशान्ति पिता श्री शिवबाबा याद है ?

ओम शान्ति। रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं। बच्चे समझते हैं हम बहुत बेसमझ बन गये थे। माया रावण ने बेसमझ बना दिया था, हम देवता से बन्दर बन पड़े थे। मनुष्य को बन्दर बुद्धि कहा जाता है। यह भी बच्चे समझते हैं बाप को जरूर आना ही है जबकि नई दुनियां की स्थापना होती है। तीन चित्र भी हैं ब्रह्मा द्वारा स्थापना, विष्णु द्वारा पालना, शंकर द्वारा विनाश। क्योंकि करनकरावनहार है ना। एक है जो करता है और कराता है। पहले किसका नाम आवेगा। जो करता है, फिर जिस द्वारा कराते हैं। करनकरावनहार कहा जाता है। ब्रह्मा द्वारा नई दुनिया की स्थापना कराते हैं। यह भी बच्चे जानते हैं हमारी जो नई दुनिया है जो हम स्थापन कर रहे हैं, उसका नाम ही है देवी देवताओं की दुनियां। सतयुग में ही देवी देवताएं होते हैं और कोई को देवी देवता नहीं कहा जाता है। वहां मनुष्य होते ही नहीं। है एक ही देवी देवता धर्म। दूसरा कोई धर्म है नहीं। अभी तुम बच्चों को स्मृति आई है। बरोबर हम देवी देवताएं थे। निशानियां भी हैं। इस्लामी, बौद्धी, क्रिश्चिन आदि सभी अपनी2 निशानी है। हमारा जब राज्य था तो और कोई नहीं था। फिर और सभी धर्म हैं तो देवी देवता धर्म नहीं है। गीता में अक्षर बड़े अच्छे2 हैं; परन्तु कोई समझ नहीं सकते हैं। बाबा कहते हैं विनाश काले विपरीत बुद्धि और विनाश काले प्रीत बुद्धि। विनाश तो इस समय ही होता है। बाप आते भी हैं संगम पर जबकि दुनियां चेंज होती है। बाप तुम बच्चों को बदली में सभी कुछ नया देते हैं। वह सोनार भी है, धोबी भी है। बड़ा व्यापारी भी है। विरला कोई बाबा से व्यापार करे। इस व्यापार में तो अथाह फायदा है। पढ़ाई में बहुत फायदा होता है। महिमा भी की जाती है पढ़ाई कमाई है। नालेज है सोर्स ऑफ इनकम। बाप कहते हैं मैं तुमको पढ़ाता हूँ। इसमें तुमको अथाह कमाई है। सो भी जन्म जन्मान्तर के लिये कमाई है। तो ऐसे पढ़ाई अच्छी रीत पढ़नी चाहिए ना और बहुत सहज पढ़ाता हूं। सिर्फ़ एक ही हफ्ता समझो, फिर भल कहां भी जाओ। तुम्हारे पास पढ़ाई आती रहेगी अर्थात् मुरली मिलती रहेगी तो फिर कब लिंक नहीं टूटेगी। यह है आत्माओं और परमात्मा का लिक। गीता में भी यह अक्षर है। विनाश काले विपरीत बुद्धि विनश्यन्ती। प्रीत बुद्धि विजयन्ती। तुम जानते हो यह सभी जंगली जानवर हैं। एक दो को मारते काटते ही रहते हैं। इन जैसा क्रोध विकार और कोई में होता नहीं। यह भी गायन है द्रौपदी ने पुकारा। बाप ने समझाया है तुम सभी द्रौपदियां हो और पुरूष हैं सभी दुशासन। द्रौपदी ने पुकारा कि हमको नंगन करते हैं। बाप समझाते हैं ऐसे2 अत्याचारी थे। जिनको जानवर से भी बदतर कहा जाता है। गऊ एक ही बार बैल के पास जाती है ना। ..... फिर कब बैल की वारी में आवेंगे ही नहीं। बैल के सामने कब आवेंगे ही नहीं। लड़ पड़ेंगे। यहां मनुष्य देखो कितने गंदे हैं। इसलिये द्रौपदी ने पुकारा है मुझे नंगन करते हैं। जुआ की बात है ना। दुशासन मुझे नंगन करते हैं। मैं रजोस्वला हूं मुझे हाथ न लगाओ। मुझे नंगन न करो। यहां के मनुष्य ऐसे हैं जो भल कुछ भी हो तो भी काला मुंह करने बिगर रहेंगे नहीं। जानवरों से भी बदतर हैं। सतयुग में तो नंगन होने का हुकुम ही नहीं। इस समय है घोर अंधियारा। बाप देख रहे हैं कितना गंद है। कामी कुत्ते छोड़ते ही नहीं। कहते हैं हम ऐसे हैं तो भी नंगन करते हैं। उनके पास ज्ञान है तब ही पुकारती है। बड़े गन्दे मनुष्य हैं। तुम भी समझ सकते हो बरोबर ऐसे हैं ना। भगवानुवाच, बाप कहते हैं बच्चे अभी विकार में मत जाओ। मैं तुमको स्वर्ग में ले चलता हूं। तुम सिर्फ मुझे याद करो। अभी विनाश काले है ना। किसकी भी सुनते नहीं हैं। लड़ते ही रहते हैं। कितना उनको कहते हैं शान्त करो। यह खुशी मनाने का समय है; परन्तु शान्त करते ही नहीं। अपने बच्चों आदि से बिछुड़ कर लड़ाई के मैदान में जाते हैं। कितने मनुष्य मरते हैं। कोई वैल्यु नहीं। मनुष्य की अगर वैल्यु है, महिमा है, तो इन देवी देवताओं की। अभी तुम यह बनने लिये पुरूषार्थ कर रहे हो। तुम्हारी महिमा वास्तव में इन देवताओं से भी जास्ती है। तुमको अभी बाप पढ़ा रहे हैं। तुम समझते हो हम स्टुडेन्ट हैं। कितनी ऊंच पढ़ाई है।

पढ़ने वाले कितने नीच तमोप्रधान हैं। तुम बहुत .....

जन्मों के अन्त में बिल्कुल ही तमोप्रधान हो। मैं तो सदैव सतोप्रधान ही हूं। मैं तो बच्चों का ओबीडियन्ट सर्वेन्ट बनकर आया हूं। विचार करो हम कितने छी छी बन गये हैं। बाप हमको कितना वाह वाह बनाते हैं। भगवान बैठ मेहतरों को पढ़ाते हैं। कितना उंच बनाते हैं। बाप खुद कहते हैं मैं बहुत जन्मों के अन्त में आया हूं। तुम सभी को तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाने आया हूं। अभी तुमको पढ़ा रहा हूं। तुम मेहतरों, भक्ति करने वालों में कोई समझ नहीं है। घमंड अपना कितना है। कितने क्रोधी होते हैं। बाप कहते हैं इन साधुओं का भी उद्धार करने मुझे आना पड़ता है। इसलिये यह भी लगा हुआ है जो अपन को ईश्वर कहलाते हैं वह हिरण्यकश्यिप जैसे दैत्य हैं। तुम्हारा एक गीत भी है साधु–सन्त–महात्मा अक्षर बेमाना, मेहतर उनसे बेहतर जो खाते मेहनत का खाना। यह मेहतर न हो तो कितना गंद हो जाये। साधु सन्त आदि न हो तो उन्हों बिगर कुछ होगा क्या। यह तो और ही पतित बनाते हैं। बाप कहते हैं मैं ने तुमको स्वर्गवासी बनाया, फिर तुम नर्कवासी कैसे बने, किसने बनाया? जो अपन को ईश्वर कहते हैं वह तो बड़े2 ते बड़े बेवकूफ ठहरे। मुझे गाली भी देते हैं। सभी को गिराते भी हैं। कह देते हैं ईश्वर सर्वव्यापी है। गायन भी है विनाश काले विपरीत बुद्धि विनश्यन्ति। प्रीत बुद्धि विजयन्ति। फिर जितना2 प्रीत बुद्धि रहेंगे अर्थात् बहुत याद करेंगे तुम्हारा ही उतना फायदा है। लड़ाई का मैदान है ना। साधु संत आदि यह नहीं जानते गीता में कौन सी युद्ध बताई है। उन्होंने फिर कौरवों और पाण्डवों की युद्ध बैठ दिखाई है। कौरव सम्प्रदाय पाण्डव सम्प्रदाय भी हैं; परंतु युद्ध तो कोई नहीं। पाण्डव उनको कहा जाता है जो बाप को जानते हैं। बाप से प्रीत बुद्धि हैं। कौरव उनको कहा जाता है जो बाप से विपरीत बुद्धि हैं। बाप को गाली देते रहते हैं। अक्षर तो बहुत अच्छे2 समझने लायक हैं। अभी है संगम। तुम जानते हो नई दुनिया की स्थापना हो रही है। बुद्धि से काम लेना है। अभी दुनिया कितनी बड़ी है। सतयुग में कितने थोड़े मनुष्य होंगे। छोटा झाड़ होगा ना। वह झाड़ फिर बड़ा होता है। मनुष्य सृष्टि रूपी यह उल्टा झाड़ कैसी है यह भी कोई समझते नहीं हैं। इनको कल्प वृक्ष भी कहा जाता है। वृक्ष का नालेज भी चाहिए ना और वृक्ष का नालेज तो बहुत सहज है। झट बता देंगे। इस वृक्ष का नालेज भी ऐसा सहज है; परंतु है यह ह्युमन वृक्ष। मनुष्यों को अपने वृक्ष का पता नहीं पड़ता। कहते भी हैं गाड इज क्रियेटर। तो जरूर चैतन्य है ना। बाप सत्य है, चैतन्य है, ज्ञान का सागर है। उनमें कौन सा ज्ञान है यह भी कोई नहीं समझते हैं। बाप ही बीज रूप चैतन्य है। उनसे ही सारी रचना होती है। तो बाप बैठ समझाते हैं मनुष्यों को अपने झाड़ का पता नहीं है और झाड़ों को अच्छी रीत जानते हैं। झाड़ का बीज अगर चैतन्य होता तो बतलाता ना; परन्तु वह तो जड़ है। तो अभी तुम बच्चे ही रचयिता और रचना के राज को जानते हो। रचयिता बाप को सर्वव्यापी थोड़े ही कहेंगे और जो आम होते हैं उनका बीज तो व्यापक है, जो लगाया जाता है और झाड़ निकलता है। वह है जड़। यह तो चैतन्य है। सत् है, चैतन्य है, ज्ञान का सागर है। चैतन्य में तो बात चीत कर सकते हैं ना। मनुष्य का तन सबसे उंच अमूल्य गिना जाता है। इनका मूल्य कथन नहीं कर सकते। बाबा आकर आत्माओं को समझाते हैं। तुम रूप भी हो बसंत भी हो। बाप है ज्ञान का सागर। उनसे तुमको रत्न मिलते हैं। यह ज्ञान रत्न है। जिस रत्नों से वह रत्न भी तुमको ढेर मिल जाते हैं। ल0ना0 को देखो कितने रत्न हैं। हीरों जवाहरों के महलों में रहते हैं। नाम ही है स्वर्ग। जिसके तुम मालिक बनने वाले हो। कोई गरीब को अचानक बड़ी लाटरी मिलती है तो चर्ये हो जाते हैं ना। बाप भी कहते हैं माया तुमको बिल्कुल ही चर्या बना देती है। माया आधा कल्प लिये जीत पा लेती है। तुमको आगे चल बतावेंगे माया कितने अच्छे2 महारथीयों को हप कर लेती है। एकदम .... लेती है। कहते हैं ना खुदा को खैर करे बस गये कि गये। तुमने सर्प को देखा है ना मेंढक को कैसे पकड़ता है। जैसे गज को ग्राह हप करते हैं ना। सर्प मेंढक को एकदम सारा ही हप कर लेती है। मेंढक जब कूदता है तब सर्प उनको पकड़ता है। यहां से जैसे गोरा दिखाई पड़ता है। माया भी ऐसी है। बच्चों को जीते जी पकड़ते2

एकदम खत्म कर देती है। जो फिर कब बाप का नाम भी नहीं लेते। फिर गटर में जाकर पड़ते हैं। योगबल की ताकत तुम्हारे में बहुत कम है। सारा मदार योगबल पर है। जैसे सर्प मेंढक को हप करता है, तुम बच्चे भी सारी बादशाही को हप करते हो। सारी विश्व की बादशाही तुम ले लेंगे चुपके से। बाप कितना सहज युक्ति बताते हैं। कोई हथियार आदि नहीं। बाप ज्ञान की अस्त्र शस्त्र देते हैं। उन्होंने फिर स्थूल हथियार आदि दे दिया है। गीता में ही उल्टा कर दिया है। तमोप्रधान होने कारण गीता को भी तमोप्रधान बना दिया है। फिर थोड़ा कुछ रह जाता है तब बाप आते हैं। इस समय तुम भी कहेंगे हम क्या बन गये थे जो चाहिए सो कहो। हम ऐसे थे जरूर। भल है तो मनुष्य; परन्तु गुण और अवगुण तो होते हैं ना। इसलिये उन्हों की महिमा गाते हैं आप सर्वगुण सम्पन्न..... हम निर्गुण हारे में कोई गुण नाहीं। इतना बेअकल बन पड़े हैं। इस समय सारी दुनिया निर्गुण है अर्थात् एक भी देवताई गुण नहीं है। बाप जो गुण सिखलाने वाला है उनको ही नहीं जानते हैं। इसलिये कहा जाता है विनाश काले विपरीत बुद्धि। अभी विनाश तो होता ही है और नई दुनियां स्थापन होती है। इनको कहा जाता है विनाश काले। यह है अन्तिम विनाश। फिर आधा कल्प कोई लड़ाई आदि होती ही नहीं। मनुष्यों को कुछ भी पता नहीं है। विनाशकाले विपरीत बुद्धि है तो जरूर पुरानी दुनियां का विनाश होगा। इसलिये पुरानी दुनियां में कितनी आपदाएं हैं। मरते ही रहते हैं। बाप इस समय की हालत बतलाते हैं। फर्क तो बहुत है ना। आज भारत का यह हाल है। कल भारत क्या होगा। आज यह है। कहां तुम होंगे। तुम बच्चे जानते हो यह हैवज दुनियां है। पहले नई दुनियां कितनी छोटी थी। वहां तो हीरे जवाहर होते थे। कितने हीरे जवाहर तुम्हारे महलों में होंगे। भक्ति मार्ग में तुम्हारा मंदिर भी कोई कम थोड़े ही होता है। इससे ही फिर मस्जिदों आदि में ले गये हैं। सिर्फ़ कोई एक सोमनाथ का मंदिर थोड़े ही होगा। एक भांति बनाऊंगा उनको देखकर और भी बनावेंगे। एक सोमनाथ मंदिर से ही कितना लूटा है। फिर बैठ अपना यादगार बनाया है। तो दिवारों में पत्थरों में लगाते हैं। इन पत्थरों की क्या वैल्यु होगी। इतनी जरी हीरे का भी कितना दाम है। बाबा जवाहरी था एक रती का हीरा होता था। 90 रूपये रती। अभी तो कीमत है हजारों रूपया। मिलती भी नहीं। बहुत वैल्यु बढ़ गई है। इस समय विलायत आदि तरफ धन बहुत है। सतयुग के आगे तो यह कुछ भी नहीं। अभी बाप कहते हैं विनाश काले विपरीत बुद्धि। बाकी आठ वर्ष हैं तो मनुष्य हँसते हैं। बाप कहते हैं मैं कितना समय बैठा रहूंगा। मुझे कोई यहां मजा आता है क्या। मैं तो न सुखी न दुःखी होता हूं। मेरे ऊपर ड्यूटी है पावन बनाने की। तुम यह थे सो अभी यह बन गये हो। फिर तुमको ऐसा ऊँच बनाता हूं। तुम जानते हो हम फिर वह बनने वाले हैं। अभी तुमको यह समझ में आई है हम इस दैवी घराणे के भांति थे। राजाई थी, फिर और2 आने लगे। अभी यह चक्र पूरा होता है। अभी तुम समझते हो लाखों वर्ष की तो बात ही नहीं। यह लड़ाई है ही विनाश की। उस तरफ तो बहुत आराम से मरेंगे। कोई तकलीफ ही नहीं होगी। कौन बैठ ..... करेंगे और पिनी पहनेंगे। वहां तो यह रसम ही नहीं। उन्हों का मौत सहज है। यहां तो दुःखी हो कर मरते हैं। क्योंकि तुमने सुख बहुत देखा है। तो दुःख भी तुमको देखना है। रक्त की नदियां यहां बहेंगी। हिन्दू मुसलमान इकट्ठे रहे हुये हैं। वहां दिन प्रति दिन सख्ती होती जावेगी। फिर हाथ खाली आना पड़ेगा। ....गना भी मुश्किल हो जावेगा। 10 हजार लाख रूपया दे तब मुश्किल से टिकेट मिले। वह समझते हैं यह लड़ाई शान्त हो जावेगी; परन्तु शान्त तो होनी नहीं है। मिरवा मौत मलु का शिकार। तुम देवता बनते हो तो कलियुगी पतित सृष्टि पर आ नहीं सकते हो। गीता में भी है भगवानुवाच विनाश भी देखो स्थापना भी देखो। सा0 हुआ ना। यह सभी सा0 अन्त में होंगे। फलाने2 यह बनते हैं। फिर उस समय रोवेंगे बहुत बहुत पछतावेंगे। सजा खावेंगे। कर ही क्या सकेंगे। यह तो 21 जन्मों की लाटरी है। फिर बहुत पछतावेंगे, नसीब कुटेंगे। स्मृति तो आती है ना। सा0 बिगर किसको सजा मिल नहीं सकती। सभा बैठती है। तामर मोर ध्वज की कथा भी है ना। सभी को सा0 होता जावेगा। अभी तो बड़ी आफतें आनी हैं। तुम जीते रहेंगे। तुमको खुशी में रखने लिये

सा0 कराते रहेंगे। तुमको रंज होने का तो है नहीं। कर्मातीत अवस्था को पा लेंगे। तो अभी विपरीत और प्रीत को समझते हो। तुम नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार बाप को कितना प्यार करते हो। वह विपरीत बुद्धि तो कह देते हैं कुत्ते बिल्ले गदहे सभी में परमात्मा है। बाप कहते हैं मैं तुमको कल्प2 आकर पढ़ता हूँ। यह बाप भी है, टीचर भी है, गुरू भी है और कोई तो हो नहीं सकता; परन्तु यह भी बच्चे भूल जाते हैं। अहंकार आ जाता है। अभी बाप ने मुरली चलाई यह है आत्मा का भोजन। अभी फिर तुमको टोली खिलाते हैं। वह है शरीर का भोजन। वह सिर्फ़ आत्मा का भोजन। यह आत्मा का भी तो शरीर का भी है। आत्मा को टेस्ट आती है। यह मीठा अच्छा है यह कड़वा है। आत्मा में ही अच्छे वा बुरे संस्कार रहते हैं। बाप भी आत्माओं को पढ़ाते हैं। अपन को आत्मा समझना इसमें ही बहुत मेहनत है। इस एक जन्म में ही इम्तहान पास करना है और बहुत प्रेम से बाप को याद करना है। अच्छा रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का यादप्यार, गुडमॉर्निंग।

24/12/68 की मुरली की रही हुई पायन्ट्स :– बाप भाई2 पने का डोज बहुत चढ़ाते हैं; परन्तु इतना असर नहीं रहता। बाहर में रहने वालों का तो घर आदि का भी फुर्ना रहता है। यहां तो बाप बैठा है। बाप कहते हैं मैं तुमको नयनों पर बिठाकर ले जाऊंगा। तुम्हारा नाम ही है नूरे रत्न। फिर बाप कहते हैं साहबजादे। अर्थ तो पूरा है ना। साहब के हम बच्चे और बच्चियां हैं। बाप बैठ श्रृंगार करते हैं। तुम खुद भी कहते हो हम साहबजादे साहबजादियां बनेंगे और तो कोई बना न सके। तो यह सुमिरण करना है। सुमिरण कर अति इन्द्रिय सुख को पाना है। यह दादा भी कहते हैं मैं बहुत खुशी में रहता हूं। 21 जन्म लिये अति इन्द्रियसुख मिलता है और भी जास्ती सुख रहता है। यहां तुम आते हो रिफ्रेश होने लिये। बाबा से डोज लेने। बड़ा मजा आता है। अच्छा ही रिफ्रेश होकर जाते हैं। फिर बाहर जाने से कितना घोटाला हो जाता है। जैसे कि जंगल में चले जाते हैं। यह भी ड्रामा की नुंध है। तुम्हारे ऊपर तो गुण्डों की नजर भी न पड़े। सतयुग में गुण्डे होते ही नहीं। यहां का वायुमंडल बहुत खराब है। दुनियां दिन प्रति दिन गंदी होती जाती है। कोई देखे भी नहीं। तो अन्दर ही पर्दे नसीन रहे। जैसे छिपाकर कपड़े पहनाकर ले जाते हैं। बाप भी कहते हैं तुमको छिपाकर घर ले जाऊंगा। कोई की नजर भी न पड़े। ऐसे2 अन्दर में विचार करो तो तुमको बड़ा मजा आवेंगा। कोई बगुले की नजर भी न पड़े। वह बगुले हैं भार खाने वाले। तुम हंस मोती चुगने वाले हो। यह नशा चढ़ता है फिर ढीला हो जाता है। सारा दिन यही याद रहे बाबा बाबा, बादशाही बाबा बादशाही। जैसे वह नशे में कहते हैं ना अमल अमल, शराब शराब, मूत मूत मूत। किसम2 के नशे होते हैं। तुमको तो बेहद के बाप को बहुत याद करना चाहिए। इसी खुशी में रहकर औरों को भी ज्ञानअमृत पिलाना है हर्षित मुख से। मुखड़ा सदैव खिला हुआ होना चाहिए। मुरझाया हुआ मुख न होना चाहिए। तुमको ऐसा हर्षित रहना है। ज्ञान को सुमिरण कर बहुत आनन्द आता है। तो वह चेहरा होना चाहिए ना। भगवान आज्ञा देते हैं तो वह सिर पर रखना चाहिए। यह तो एड्युकेशन मिनिस्टर्स आदि हैं। वह है जिस्मानी नालेज। यह भी एड्युकेशन है ना। यह जो भी डिपार्टमेन्ट है वह सभी बाप के पास है। जो भी डिपार्टमेन्ट के मिनिस्टर्स आदि हैं उन सभी डिपार्टमेन्ट का तन्त बाप के पास है। बाप है सैक्रीन। यह जो भी फलाने2 मिनिस्टर्स आदि हैं सभी बाप के चीच में बंधे हुये हैं। अभी तुम ऐसे बाप के बच्चे बने हो। तो तुमको बहुत खुशी होनी चाहिए। शिवबाबा का बनने से कोई भी, कभी भूख नहीं मर सकता। अच्छा।

सूचनाः– जयपुर तिलक नगर निर्मला बहन का सेंटर

चेंज हुआ है जिसकी एड्रेस भेजर रहे हैंः–

Brahma Kumaris
312, Near Bhag singh Chauraha
ADRASH NAFAR
XX J A I P U A - - -